क्या यह बस

मिट्टी का एक ढेला है?

ललिता मंजुनाथ

जो स्कूल सीखने–सिखाने का काम रुचिकर माहौल में करना चाहता है, वह हस्तकार्य के लिए समर्पित एक जगह अलग से रख सकता है। एक शिल्प–केन्द्र या स्टूडियो विभिन्न तरह की सामग्री के लिए समृद्ध संसाधन मुहैया करवाने का काम कर सकता है। छोटी उम्र से ही बच्चों को इससे परिचित करवाया जा सकता है।

मिट्टी, बाँस, लकड़ी, नारियल के खोल, बीज की फली तथा कागज, धागा, कपड़ा और मनकों जैसी अन्य मनमोहक सामग्री से बच्चों का परिचय करवाया जा सकता है और वे इनकी प्रकृति और विभिन्न तरह की विशेषताओं को समझने का आनन्द उठा सकते हैं।

एक हस्तकला–केन्द्र मिट्टी को अपने मुख्य माध्यम और साधन के रूप में प्रयोग करते हुए बच्चों के विचारों और कल्पना को बाहर आने का मौका दे सकता है। मिट्टी एक बहुत ही लचीली सामग्री है, एक ऐसा साधन है जिससे बिना किसी विशेष समस्या के कुछ भी बनाया जा सकता है, ढाला जा सकता है, तोड़कर फिर से रचा जा सकता है, जिसे बेला–लपेटा जा सकता है, फिर से प्रयोग में लाया जा सकता है। इसके लिए विशेष निवेश की आवश्यकता नहीं है और यंत्र–औजार–सामान भी बहुत कम ही चाहिए।

मगर इन बातों से थोड़ा हटकर इस पर भी विचार करते हैं कि सीखने–सिखाने के एक जीवन्त, सशक्त और खुले वातावरण के लिए क्या आवश्यक है? इस पर विचार करना इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि ज्ञानार्जन को आमतौर पर बस दक्षताएँ और ज्ञान हासिल करने तथा आत्मसात किए जाने तक सीमित करके देखा जाता है। हमें शायद इसके इस सीमित प्रयोग से आगे तक देखना होगा और अन्य महत्त्वपूर्ण विशेषताओं की ओर भी ध्यान देना होगा – जैसे, सवाल करने और शंका के लिए गुंजाइश का होना,



अपने सम्बन्धों के बारे में जागरूक होना, देखना कि डर और भय तो पैदा नहीं किया जा रहा, काम करते समय गैर–लचीली व्यवस्थाओं के तहत तो काम नहीं हो रहा, बल–प्रयोग और अनुशासन का गलत अर्थ में प्रयोग और तुलना आदि की बात तो नहीं हो रही आदि–आदि।

यह एक चर्चा करने योग्य बात है कि जब इन सब पक्षों को एक साथ मिला दिया जाता है तो किस तरह हस्तकला और मिट्टी के एक स्टूडियो में समृद्ध अनुभव पैदा किया जा सकता है। हम कुछ अनिवार्य पक्षों को लेकर देख सकते हैं कि उन्हें किस तरह एक शिक्षक के लिए कक्षा के हालात में ढाला जा सकता है।

उत्तरदायित्व के साथ काम करने की पहलकदमी

हस्तकार्य के लिए स्थान का होना काम करने के लिए बहुत बड़ी प्रेरणा प्रदान करता है – वह चाहे व्यक्तिगत तौर

पर स्वतन्त्रता के साथ काम करने की बात हो या समूह में काम करने की। शिक्षक की न्यूनतम सहायता से विचारों और अभिव्यक्ति से भी सम्बद्ध होने का मौका मिलता है। शिक्षक की भूमिका यह सुनिश्चित करने की अधिक रहती है कि वे गम्भीर रहें, काम के प्रति सहज प्रतिक्रिया का रुख रखें और शान्त रहते हुए भी सक्रियता से ऊर्जा को बाहर निकाल पाएँ। बीच–बीच में विचारों का आदान–प्रदान और काम पर प्रतिक्रिया भी मिलती रहे, जिसका होना विचारों और तकनीकों को उत्पन्न करने की प्रक्रिया के लिए भी आवश्यक है।

मसलों को हल करने के लिए चर्चा और संवाद का प्रयोग शिक्षक द्वारा व्यवहार

सम्बन्धों और एक–दूसरे की खोजों को साझा करने से सम्बन्धित प्रश्नों को कक्षा में एकीकृत करने के बारे में सोचा जा सकता है, फिर ये चाहे काम से सम्बन्धित हों या अपनी सोच के बारे में। आवश्यक नहीं है कि काम और सोच में से किसी एक को अधिक वरीयता दी जाए – इसके बिना भी यह सब संवेदनशील तरीके से किया जा सकता है।

यदि आप समस्याओं और मसलों को हल करने के लिए भय का इस्तेमाल न करने के बारे में गम्भीर हैं, तो एक–दूसरे के साथ सम्प्रेषण के लिए आपस में बातचीत और संवाद की महत्त्वपूर्ण भूमिका हो सकती है।

आप कक्षा की शुरुआत किसी ऐसी बात पर चर्चा से कर सकते हैं जो सीखने–सिखाने के लिए कारगर प्रक्रिया का सहज प्रवाह होने से रोक रही है। यह कक्षा के दौरान भी किया जा सकता है।

हमारे सम्बन्धों का माहौल मिट्टी के स्टूडियो में एक–दूसरे की प्रतिभा और योग्यता की समालोचना या प्रशंसा के लिए स्थान रहता है और इस प्रकार विचारों के आदान–प्रदान और अलग–अलग तरह की प्रतिक्रियाओं के लिए भी अच्छी गुंजाइश रहती है। शिक्षक या बड़ी उम्र का कोई व्यक्ति मौके का लाभ उठाते हुए इस पर विचार कर सकता है कि किसी तरह की तुलना तथा पक्षपात के बिना, प्रेमभाव के साथ यह सब कैसे किया जाए ताकि एक खुले और भेदभावरहित वातावरण का उद्देश्य भी परास्त न हो।

शिक्षक को विद्यार्थियों के भावपूर्ण लम्हों के प्रति जागरूक रहना चाहिए और ध्यान देना चाहिए कि काम करते समय वे कैसे अपनी मनःस्थिति को प्रकट करते हैं। यदि शिक्षण के दौरान शिक्षक अपनी ही माँगों को थोपने पर लगा रहता है तो इस बात पर हमारा ध्यान ही नहीं जाता।

विद्यार्थियों के बीच की गतिशीलता को भी देखना होगा। हम उन्हें स्वतन्त्र छोड़ देते हैं तो वे एक–दूसरे के साथ इकट्ठा रहने के विचार से उत्तेजित और उसमें पूरी तरह व्यस्त हो जाते हैं। उन पर लगातार नियन्त्रण रखने के तौर–तरीके भी इसमें शायद बहुत अधिक मदद नहीं कर पाएँगे। निरन्तर निगरानी के बिना भी किस तरह विद्यार्थियों के साथ सम्बन्ध में शान्त रहते हुए कड़ाई का आभास पैदा किया जाए, यह शिक्षक के सामने लगातार रहने वाली एक चुनौती है। शिक्षक के लिए नवाचार की बात होगी कि वह इन पक्षों को बच्चों के साथ अपनी बातचीत में पिरो ले और वे इस पैटर्न के प्रति जागरूक हो जाएँ।

मूल्यांकन और प्रतिक्रिया

कला और शिल्प के क्षेत्र में बहुत बार हम तुरन्त प्रतिक्रिया देते हैं, जैसे – अच्छा है, अच्छा नहीं है, सुन्दर, बिल्कुल सही, कमाल का, वाह आदि–आदि। लेकिन कैसी होगी वह तथ्यात्मक या वस्तुपरक प्रतिक्रिया, जिसमें अत्यधिक प्रशंसा या नकारात्मक टिप्पणी के न होते हुए भी आलोचनात्मक सराहना का भाव हो? यह एक मुश्किल पक्ष है लेकिन इसे अनदेखा भी नहीं किया जा सकता क्योंकि बच्चे मूल्यांकन के ऐसे तरीकों के प्रभाव में आसानी से आ सकते हैं जो शायद उनके सहज रचनात्मक बोध और क्षमता को सीमित कर दें।

एक शिक्षक किसी भी कार्य के बारे में निर्णय कैसे लेता है (कि वह कैसा है) और बच्चों द्वारा किए गए काम का मूल्य कैसे लगाता है? यह एक बहस का विषय है जिसके कोई तैयार जवाब या तरीके नहीं हैं। लेकिन यह स्पष्ट है कि वयस्कों द्वारा काम को देखने के तरीके में कुछ गलत तो है और वे बहुत ही आरामदायक, हल्के तरीकों से मूल्यांकन करने की ओर प्रवृत्त रहते हैं ताकि बच्चों की कुशलता को आंकने के किसी न किसी तरीके तक जल्द ही पहुँच पाएँ।

इस समस्या से सम्बोधित होने का एक बहुत सरल तरीका है कि किए गए काम को प्रदर्शित करने के लिए खुला स्थान उपलब्ध करवाया जाए जहाँ वह सबके द्वारा देखा जा सके। प्रत्येक बच्चा कोई भी कलाकृति बनाने के बाद अपने विचार तथा इरादे को साझा कर सकता है। इससे कला–कृतियों की वरीयता तय करने, किस की कलाकृति अधिक अच्छी है और किसकी नहीं वाली समस्या से निपटा जा सकता है।

परिणाम से प्रक्रिया अधिक महत्त्वपूर्ण

सीखने–सिखाने के किसी भी अच्छे वातावरण के लिए आवश्यक है कि काम करने की प्रक्रिया को अधिक महत्त्व दिया जाए और अन्तिम परिणाम की चिन्ता न की जाए। कोशिश और प्रयोग करने का प्रतिरोध, जोखिम उठाने का विरोध और केवल उसी बात पर ध्यान देना जो हाथ में है – ये सब बातें शायद काम करने की प्रक्रिया के दौरान बच्चे को कसौटी पर न कस सकें।

बच्चे काम शुरू न कर पा रहे हों तो इसके क्या कारण हैं और राह की रुकावटें क्या हैं, यह पता लगाने में शिक्षक एक उत्प्रेरक की भूमिका निभा सकता है।

बच्चे द्वारा पूरी मेहनत के साथ ध्यान से बनाई गई मिट्टी की कोई भी वस्तु सम्पूर्ण होने के बाद यदि ढह जाती है तो यह उसके लिए एक ऐसा अनुभव है जिससे वह कुछ सीख पाता है – बावजूद इसके कि उसकी बनाई वस्तु प्रदर्शित नहीं की जा सकती।

जब शिक्षक इन सब पक्षों और दृष्टिकोणों को ध्यान में रखता है, और एक गम्भीर उद्देश्य तथा सरोकार अपने सामने रखता है तो कक्षा में सीखने–सिखाने का माहौल निश्चित तौर पर बेहतर हो सकता है। अनुसरण के कोई विशेष, निश्चित तरीके नहीं हैं, बल्कि स्वयं के प्रति इस कटिबद्धता की आवश्यकता है कि लगातार, हर स्थिति में दृढ़ता और जिज्ञासा के साथ खोज करने की ऊर्जा बनी रहे।

"सीखना असल में तब होता है जब प्रतिस्पर्द्धा की भावना नहीं होती।" – **जे. कृष्णमूर्ति**

"अधिकतर सीखना शिक्षण का नतीजा नहीं होता। बल्कि यह तो एक सार्थक पृष्ठभूमि में बे–रोकटोक हिस्सेदारी का नतीजा होता है। अधिकतर लोग 'उसके साथ' होने से सबसे बेहतर सीखते हैं मगर इसके बावजूद स्कूल उनके व्यक्तिगत, बोधात्मक विकास की पहचान को लम्बी–चौड़ी, विस्तृत योजना बनाने और जोड़–तोड़ के साथ सम्बद्ध करके देखते हैं।" –**इवान इलिच** की पुस्तक 'डी–स्कूलिंग सोसायटी' से।

ललिता मंजुनाथ ने द वैली स्कूल के जूनियर स्कूल में बच्चों के साथ काम किया है। बाद में सेण्टर फॉर लर्निंग (सी.एफ.एल.) में भी काम किया। उनकी रुचि बच्चों के लिए मिट्टी के बर्तन बनाने का कला और शिल्प केन्द्र स्थापित करने में भी पैदा हुई ताकि पदार्थों के साथ काम करने के रुचिकर तरीके तलाशे जाएँ। वर्तमान में वे सी.एफ.एल. में पूर्णकालिक कार्य से सेवानिवृत्त हो चुकी हैं और शिक्षा तथा ज्ञानार्जन पर पुनर्विचार में दिलचस्पी रखने वाले समूहों तथा अन्य स्कूलों के साथ काम करती हैं। उनसे lalita.manjunath@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवादः** रमणीक मोहन

